



अभिवादन परम्परा

श्याम शंकर उपाध्याय

पूर्व जनपद एवं सत्र न्यायाधीश/
पूर्व विधिक परामर्शदाता मा0 राज्यपाल
उत्तर प्रदेश, राजभवन
लखनऊ।

मो0- 9453048988

ई-मेल: ssupadhyay28@gmail.com

1. सभ्य मानव समाज में अभिवादन की परम्परा उतनी ही पुरानी है जितनी कि व्यवस्थित मानव समाज के अस्तित्व में आने की । भारतीय संस्कृति सहित विश्व की समस्त सभ्यताओं व संस्कृतियों में मनुष्यों के बीच सदैव से ही परस्पर अभिवादन की परम्परा रही है । अभिवादन का सम्प्रेषण अथवा प्रकटीकरण केवल भाषा व शब्दों से ही नहीं होता अपितु इसका प्रकटीकरण बिना कुछ बोले संकेतों, हाव-भाव, मनोभाव तथा भाव-भंगिमा (body language) आदि के माध्यम से भी होता है । मनुष्य से इतर पशु-पक्षी भी आपस में जब एक दूसरे से मिलते हैं तो वह भी अपने मनोभावों अथवा अभिवादन को अपने हाव-भाव, विशेष प्रकार की ध्वनि अथवा संकेतों आदि से एक दूसरे तक प्रेषित करते हैं ।
2. समय के प्रवाह के साथ अभिवादन परम्परा में भी बदलाव आता गया । नमस्ते, नमस्कार, प्रणाम, दण्डवत, साष्टांग दण्डवत, चरण-स्पर्श, झुककर नमस्कार करना, आदाब-अर्ज, हेलो आदि-आदि अभिवादन के तरीके रहे हैं जो अलग-अलग स्तर की श्रद्धा एवं सम्मान प्रकट करने के लिए प्रयुक्त होते हैं । माता-पिता, गुरु व देवों के प्रति दण्डवत अभिवादन करना अनिवार्य कर्तव्य, शिष्टता व कृतज्ञता की श्रेणी में आता है। भारतीय अभिवादन परम्परा **“अभिवादनशीलस्य नित्यम् वृद्धोपसेविनः, चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्याशोबलं”** की रही है जिसका तात्पर्य है कि जो व्यक्ति दूसरों को यथोचित अभिवादन करता है और वयोवृद्धों के प्रति सेवाभाव रखता है उसकी चार चीजों-आयु, विद्या, यश व पराक्रम की वृद्धि होती है । महाभारत के युद्ध से पूर्व पाण्डवपक्ष की ओर से अर्जुन और कौरव पक्ष की ओर से दुर्योधन जब कृष्ण के पास उनसे अपने-अपने पक्ष में सहायता मांगने के लिए पहुँचे तो उस समय कृष्ण सो रहे थे । कृष्ण के प्रति आदर व सम्मान का भाव रखने वाले अर्जुन कृष्ण के पैर की तरफ बैठे जबकि अनादर व असम्मान का भाव रखने वाला दुर्योधन उनके सिर की तरफ बैठा । कृष्ण ने जागने पर जब दोनों से उनके आने का कारण पूछा तो दोनों ने उनसे अपने-अपने आने का कारण बताया । कृष्ण ने पहले पैर की ओर बैठने वाले अर्जुन से पूछा कि मुझमें और मेरी अक्षौहिणी सेना (21,870 रथ, 21,870 हाथी, 65,610 घोड़े, 10,09,350 पैदल सिपाही) में से किसे चाहोगे तो दुर्योधन नाराज होने लगा और बोला कि मैं आपके सिर की तरफ बैठा था आपको पहले मुझसे पूछना चाहिए था न कि अर्जुन से । कृष्ण ने उत्तर दिया कि चूँकि अर्जुन मेरे पैर की तरफ बैठे थे इसलिए उठने पर मैंने पहले उन्हें देखा था इसलिए उन्हीं से सर्वप्रथम पूछा हूँ और सिर की तरफ बैठा होने के कारण आपको (दुर्योधन को) मैंने बाद में देखा । अर्जुन ने महाभारत के युद्ध में स्वयं कृष्ण का चयन अपने सारथी के रूप में करते हुए उन्हें मॉग लिया और दुर्योधन कृष्ण की अक्षौहिणी सेना ही पा

सका । कुशल सारथी कृष्ण के नेतृत्व में पाण्डवपक्ष की महाभारत में विजय हुई जबकि कृष्ण की विशाल अक्षौहिणी सेना पाने के बाद भी कौरव पक्ष की पराजय हुई । इस वृत्तान्त का एक पक्ष अर्जुन व दुर्योधन के कृष्ण जैसे महान लोकनायक व सारथी के प्रति उनके अपने-अपने सम्मान-असम्मान व आदर-अनादरपूर्ण दृष्टिकोण से भी सम्बन्ध रखता है जिसका परिणाम एक के लिए विजय के रूप में तो दूसरे के लिए पराजय के रूप में सामने आया था । इसलिए दूसरों के प्रति आदर व सम्मान का भाव रखना स्वयं अपने ही हित में होता है ।

3. मनुस्मृति में महाराज मनु द्वारा अभिवादन के योग्य विभिन्न श्रेणी के व्यक्तियों का क्रम इस प्रकार बताया गया है : **“वित्तं वंधुर्वयः कर्म विद्या भवति पंचमी, एतानि मान्यस्थानानि गरीयो यद्यदुत्तरम्”** जिसका अर्थ है “उक्त पाँच श्रेणियों के व्यक्ति 1. धनवान 2. बन्धु-बान्धव 3. वयोवृद्ध 4. अच्छे कर्म करने वाला तथा 5. विद्वान क्रमशः उल्टे क्रमानुसार अभिवादन के योग्य होते हैं । उपरोक्त के उल्टे क्रमानुसार सर्वप्रथम 1. विद्वान 2. अच्छे कर्म करने वाला 3. वयोवृद्ध 4. बन्धु-बान्धव तथा 5. धनवान क्रमशः प्रणाम के योग्य होते हैं । मनु के अनुसार **“क्रोधवन्तं मदोन्मत्तं धावन्तं धनगर्वितम्, अलसं पिशुनं चैव नमस्कारेऽपि वर्जयेत्”** अर्थात् अत्यन्त क्रोधी, अत्यन्त घमण्डी, दौड़ते हुए को, धन की गर्मी वाले को, अत्यधिक आलसी तथा चुगलखोर को नमस्कार करने की वर्जना है । मनुस्मृति के ही अनुसार जो व्यक्ति अभिवादन के प्रत्युत्तर में अभिवादन नहीं करता उसे अभिवादन के योग्य होना नहीं माना गया है । विद्या, पद, आयु आदि की दृष्टि से बड़ों को अभिवादन करते समय अपने आसन से उठ जाना चाहिए । मनुस्मृति के ही अनुसार बड़े भाई की पत्नी तथा आदरणीय व्यक्तियों की पत्नियों सदैव अभिवादन के योग्य होती हैं किन्तु अन्य सम्बन्धियों की पत्नियों केवल प्रवास से लौटने पर ही अभिवादन के योग्य होती हैं । मनुस्मृति तथा शब्दकल्पद्रुम में **“अष्टांग प्रणाम”** का तात्पर्य इस प्रकार बताया गया है : **पदम्यां कराभ्यां जानुभ्यामुरसा सिरसा दृशा, वचसा मनसा चैव प्रणामोऽष्टांग ईरितः”** जिसका अर्थ है ‘पैर, हाथ, घुटना, हृदय, सिर, आँख, वाणी और मन के संयोजन से किये जाने वाले प्रणाम को “अष्टांग प्रणाम” कहते हैं । सन्त शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरित मानस में सन्तों द्वारा सम्पूर्ण जगत को ही ईश्वर का स्वरूप मानते हुए प्रणाम करने का सुझाव देते हुए कहा है—**सियाराम मय सब जग जानी, करहुं प्रनाम जोरि जुग पानी ।**

4. भारतीय संस्कृति में माता-पिता को अभिवादन की दृष्टि से सर्वोच्च स्थान देते हुए **“सर्वतीर्थमयीमाता, सर्वतीर्थसदृश पिता”** कहा गया है जिसका अर्थ है कि माता का स्थान समस्त तीर्थों के पुण्य से भी बड़ा और पिता का स्थान स्वर्ग से भी ऊँचा है । अभिवादन प्रोटोकाल में राजा अथवा शासक का स्थान माता-पिता, गुरु, आध्यात्मिक गुरु व देवता के बाद आता है । गुरुओं के सम्मानजनक स्थान का वर्णन करते हुए कबीरदास ने कहा है **“गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काके लागू पांय, बलिहारी गुरु आपने गोविन्द दियो बताय”** । गोस्वामी तुलसीदास ने गुरुओं को अभिवादन के प्रथम योग्य होना कहते हुए कहा है **“बन्दउँ गुरु पद पदुम परागा, सुरुचि सुबास सरस अनुरागा । अमिय मूरिमय चूरन चारू, समन सकल भव रुज परिवारू । बंदउँ प्रथम महीसुर चरना, मोह जनित संसय सब हरना । सुजन समाज सकल गुन खानी, करउँ प्रनाम सप्रेम सुबानी ।”** गुरुओं व शिक्षकों के प्रति किस प्रकार आदर व सम्मान का भाव होना चाहिए, इसे निरूपित करते हुए आचार्य चाणक्य का कथन है **“एकाक्षरस्य प्रदातारं यो गुरुम् नाभिवन्दति, श्वानयोनि शतम् भुक्त्वा म्लेच्छेऽपि अभिजायते”** अर्थात् एक अक्षर का भी ज्ञान देने वाले व्यक्ति को जो गुरु मानकर यथोचित अभिवादन नहीं करता है, वह व्यक्ति सौ जन्मों तक कुत्ते की योनि में पैदा होता है और उसके बाद किन्हीं अन्य तुच्छ योनियों में चला जाता है । **पवित्र कुरान** में पारा 15 के सूरा 17 (बनी इसराईल) में माता-पिता के प्रति आदर व नम्रता आदि के बारे में इस प्रकार कहा गया है **“माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करो, यदि तुम्हारे पास उनमें से कोई एक या दोनों बूढ़े होकर रहें तो उन्हें छी तक न कहो, न उन्हें झिड़क कर उत्तर दो, बल्कि उनसे आदर के साथ बात करो और नम्रता और दयालुता के साथ उनके सामने झुककर**

रहो और प्रार्थना किया करो कि 'पालनहार, इन पर दया कर जिस प्रकार इन्होंने दयालुता और करुणा के साथ मुझे बचपन में पाला था' । तैत्तरीयोपनिषद में कहा गया है : **“मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव, अतिथिदेवो भव”** जिसका आशय है कि माता-पिता, आचार्य तथा अतिथि को देवता मानते हुए उन्हें श्रद्धा व सम्मानपूर्वक यथोचित अभिवादन करना चाहिए और उनकी सेवा करते हुए उन्हें अपने विनम्र व्यवहार से प्रसन्न रखना चाहिए ।

5. अभिवादन के महत्व और उसके तरीके पर किसी शायर का यह शेर देखिए : **रस्म-ए-ताजीम (respect) न रुसवा हो जाये, इतना मत झुकिये कि सजदा हो जाये ।** आपसे झुक के जो मिलता होगा, उसका कद आपसे ऊँचा होगा । कोई हाथ भी न मिलायेगा जो गले मिलोगे तपाक से, ये नये मिजाज का शहर है जरा फासले से मिला करो । लाख हो गयी हो दुश्मनी मिलना न छोड़िये, दिल मिले न मिले हाथ मिलाते रहिये । मशहूर उर्दू शायर फिराक गोरखपुरी साहब का नजरिया देखिए : **तुम तकल्लुफ को भी एकलाख समझते हो फिराक, दोस्त होता नहीं हर हाथ मिलाने वाला ।** झुक कर अभिवादन करने से क्या लाभ होता है, इस पर किसी शायर का यह नजरिया देखिये **“झुके आसमां का नजारा करो तुम, उसे देख जीवन गुजारा करो तुम। भारी दरख्तों को तूफों उठाये, मगर बांस झुक-झुक के खुद को बचाये । झुकेगा वही जिसमें कुछ जान है, अकड़ खास मुर्दे की पहचान है ।”** अर्थशास्त्र, लोकनीति व राजनीति आदि के परमाचार्य चाणक्य ने धूर्तों व चापलूसों की पहचान हेतु शासकों को यह परामर्श दिया है **“मुखं पद्मदलाकारं वाणी चन्दनशीतला, हृदयं छद्मसंयुक्तं त्रिविधं धूर्त लक्षणम्”** जिसका अर्थ है कि धूर्त के तीन लक्षण होते हैं—मुखमण्डल कमल के फूल की तरह खिला होता है अर्थात् धूर्त अच्छे से रूपसज्जा किये रहता है, वाणी चन्दन जैसी शीतल होती है परन्तु उसके हृदय में घोर छल-छद्म भरा होता है । इसलिए धूर्तों से परिपूर्ण संसार में एक बुद्धिमान व्यक्ति को चाटुकारिताजनित धूर्तों के छल से सावधान रहना चाहिए । रामचरितमानस की इस चौपाई को देखिए : **‘कीन्हें प्राकृत गुनगन ज्ञाना, सिर धुनि गिरा लागि पछताना’** जिसका अर्थ है कि जब कोई व्यक्ति किसी की झूठी प्रशंसा करते हुए उसका अनपेक्षित रूप से महिमामण्डन करने लगता है तब ज्ञान एवं वैदुष्य की देवी सरस्वती भी विचलित होकर अपना सिर धुनकर पछताने लगती हैं कि भला अब मैं क्या करूँ । कई बार शक्ति व अधिकारसम्पन्न व्यक्ति के भयवश अथवा उससे स्वार्थपूर्ति के उद्देश्य से भी कुछ लोग उसे अभिवादन करते हैं यद्यपि कि इस प्रकार के अभिवादन में श्रद्धा व सम्मान का वास्तविक भाव निहित नहीं होता है । किसी शायर ने अभिवादन अथवा सलाम आदि कब, किसे और क्यों किया जावे, इस पर नितान्त दुनियाबी दृष्टिकोण रखते हुए इस प्रकार कहा है : **“है अजीज तुझको जीना तो यह फन भी सीख लेना, किसे क्यों सलाम करना किसे कब सलाम करना”** । रामचरितमानस में सुन्दरकाण्ड के दोहा कमांक 37 में गोस्वामी तुलसीदास जी ने शासकों को अपने सचिवों, चिकित्सकों और गुरुजनों से सावधान रहने हेतु उन्हें इस प्रकार का परामर्श दिया है : **“सचिव बैद गुर तीनि जाँ प्रिय बोलहि भय आस, राज धर्म तन तीनि कर होइ बेगिहीं नास”** जिसका तात्पर्य है कि यदि राजा अथवा शासक के सचिव/परामर्शदाता, चिकित्सक और गुरु राजा के अप्रसन्न हो जाने के भय से अथवा किसी लाभ की आशा से राजा के हित की बात न कह कर उसे प्रिय लगने वाला परामर्श देते हैं तो इससे शीघ्र ही राज्य, शरीर और धर्म (rule of law) का नाश हो जाता है । अचानक अत्यन्त झुककर अभिवादन करने वाले व्यक्ति की श्रद्धा को सन्देह की दृष्टि से देखने का परामर्श देते हुए मनीषियों द्वारा कहा गया है **“अत्यादरो शंकनीयः”** । प्रसिद्ध हिन्दी कवि रहीम द्वारा अभिवादन की अलग-अलग प्रकृति व उसके उद्देश्य के बारे में कहा गया है **“नमन नमन बहु अन्तरा, नमन नमन बहु बान, ये तीनों नवते बहुत, चीता चोर कमान”** जिसका अर्थ है **“विभिन्न प्रकार के नमनों (अभिवादन) की प्रकृति व उनके उद्देश्य में बड़ा अन्तर होता है जैसा कि चीता, चोर व धनुष जब नीचे की ओर झुकते हैं तो अत्यन्त खतरनाक व हमलावर हो जाते हैं । मानस में भी आया है कि “नवनि नीचे कै अति दुख दाई, जिमि अंकुश धनु उरग बिलाई”** अर्थात् जिस प्रकार धनुष व बाण नीचे की ओर

झुकने पर वार करने का संकेत देते हैं, सर्प नीचे की ओर मुँह झुकाने पर काट लेता है और बिल्ली नीचे की ओर मुँह करने पर घात लगाकर हमला कर देती है उसी प्रकार कोई दुर्जन व्यक्ति जब अधिक झुक कर अभिवादन करता है तो उससे अन्ततः दुःख ही पहुँचता है । इसी क्रम में मशहूर उर्दू शायर बशीर बद्र का यह शेर देखिए : **जमीर बेचने वालों ने बड़ा काम किया है, जिन्हें उरुज (शिखर) पर देखा उन्हें सलाम किया है । एक दूसरे शायर ने कहा है : वो सर-बुलन्द रहा, और खुद-पसन्द रहा, मैं सर झुकाए रहा और खुशामदों में रहा, मेरे अजीजों यही दस्तूर है मकानों का, बनाने वाला हमेशा बरामदों में रहा । स्वाभिमान और सौम्यता के बीच सामन्जस्य रखते हुए किसी शायर का यह शेर गौर करने लायक है : "वसूलों पे जो आँच आये तो टकराना जरूरी है, जो जिन्दा हों तो फिर जिन्दा नजर आना जरूरी है । थके मादे परिन्दे जब बसेरों की तरफ लौटें, सलीकेमन्द साखों का लचक जाना जरूरी है । कम उमरी की खुदमुख्तारियों को कौन समझाए, कहां से बच के जाना है कहां जाना जरूरी है ।"** इलाहाबाद के मशहूर शायर श्री नन्दल हितैषी का यह शेर देखिए : **"पेड़ इन्सान से बड़े हैं क्योंकि वो अपनी जमीन पर खड़े हैं ।"** कहा भी गया है कि **"प्रयोजनमनुदिदश्य मन्दोऽपि न प्रवर्तते"** जिसका तात्पर्य है कि बिना प्रयोजन के कोई मूर्ख व्यक्ति भी किसी कार्य में नहीं लगता है ।

6. राष्ट्र और समाज का अहित चाहने वालों के सामने भी कभी-कभी कई लोग किस तरह सर झुकाये रहते हैं, इस पर मशहूर उर्दू शायर सागर आजमी का यह तंज देखिए : रश्मो-रशम से रार बढ़ाये हुए हैं लोग, चेहरा पशे-नकाब छुपाये हुए हैं लोग । मंदिर के नाम पर कभी मस्जिद के नाम पर, मजहब को कारोबार बनाये हुए हैं लोग । जिसको न जिन्दगी में दिया कोई आसरा, अर्थी पे उसी के कंधा लगाये हुए हैं लोग । वो सर पे जिसके मुल्के-अदावत का ताज है, उसके ही दर पे सर को झुकाये हुए हैं लोग ।

7. प्रसिद्ध समाज मनोवैज्ञानिक/लेखक बेरन व बायर्न ने चाटुकारिता (**ingratiation**) की परिभाषा इस प्रकार की है "It is a technique for gaining compliance in which the requesters first induce the target persons to like them and then attempt to change the persons' behavior in some desired manner"---**Baron & Byrne**. मनोविज्ञान की दृष्टि से चाटुकारिता व्यक्तित्व का दोष माना जाता है । कुछ सरकारी विभागों में अधिकारियों और कर्मचारियों की नौकरियों "नक्शा, मीटिंग और सलाम" पर ही चलती हैं । कुछ सामाजिक प्रक्रियाएं दूसरों पर अपना प्रभाव छोड़ने के लिए होती हैं । चाटुकारिता इसी सामाजिक प्रक्रिया का भाग होता है । अपेक्षाकृत कम आत्म-सम्मान (**low self esteem**) वाले व्यक्ति ही चाटुकारिता करते हैं न कि उच्च आत्म-सम्मान (**high self esteem**) का भाव रखने वाले व्यक्ति । व्यक्तित्व से सम्बन्धित उक्त दोष का एक पक्ष यह भी है कि अपनी कार्य क्षमता व दक्षता में आत्मविश्वास की कमी के कारण जब कोई व्यक्ति अपने नियंत्रकों अथवा शक्ति सम्पन्नों पर प्रभाव नहीं छोड़ पाता तो वह श्रद्धा व सम्मान का भाव नहीं होते हुए भी उनका पैर छूकर अभिवादन करने व चाटुकारिता के अन्य विविध प्रयासों से अपनी इस कमजोरी को छुपाने का प्रयत्न करता है । इसीलिए किसी विद्वान ने कहा है : **"If you salute your work, You need not salute anybody else."**
